بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 06 मार्च 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(06, अमान,1404 हश)

मशरिक़-ए-वुस्ता में हालिया जंगी सूरते हाल के तनाज़ुर में उम्मते मुस्लिमा को ज़र्रीं नसायह।

अनुवाद- मध्य पूर्व में होने वाले युद्धों के परिवेश में मुस्लिम उम्मत को स्वर्णिम उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 06.03.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: आँहज़रत मुहम्मद ﷺ जो पैग़ाम लेकर आए, उसका उद्देश्य यह है कि ख़ुदाए यगाना (एकमात्र ख़ुदा) पर ईमान लाया जाए, उसकी इबादत की जाए, उसकी तौहीद की स्थापना की जाए और इसके लिए प्रयास किया जाए, तथा उसके बंदों के हुक़ूक़ (अधिकारों) की अदायगी के लिए भी कोशिश की जाए। फिर एक उम्मत-ए-वहिदा बनकर आपस में भाई-भाई की तरह रहना है। लेकिन आज, इस दावे के बावजूद कि हम कलिमा पढ़ने वाले हैं, हम एक इकाई नहीं हैं। हमारे आमाल (कर्म) उस शिक्षा के अनुरूप नहीं हैं जिसका हम दावा करते हैं। नतीजातन (परिणाम स्वरूप) जब हम इस्लामी दुनिया का जायज़ा लेते हैं तो इन्तहाई क़ाबिले फ़िक्र हालत (स्थिति अत्यंत चिंताजनक) है। कुछ देशों के पास क़ुदरती वसायल (प्राकृतिक संसाधन) और उससे प्राप्त दौलत है, लेकिन इसके बावजूद दुनिया की शक्तियों के सामने उनका कोई ख़ास मक़ाम (विशेष स्थान) नहीं है और न ही दीन की उन्नति के लिए उनका कोई विशेष किरदार (योगदान) है। इसी प्रकार इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने के लिए भी उनकी कोई विशेष कोशिश दिखाई नहीं देती। इसका नतीजा बिल्कुल साफ़ है कि दूसरे लोग इस स्थिति से लाभ उठाते हैं।

मुसलमानों को यह प्रयास करना चाहिए कि बतौर मिल्लत-ए-इस्लामिया हमने एक होना, और इसके लिए हमें पूरी लगन से कोशिश करनी चाहिए। यदि ऐसा होगा, तभी हम दुनिया के हमलों से बच सकेंगे, तभी

हम अपना वक़ार (सम्मान) बनाए रख सकेंगे और इस्लाम-विरोधी शक्तियों को अपने अन्दर फूट डालने से रोक सकेंगे। इसके लिए हमें यह विचार करना होगा कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने इसके लिए क्या इंतज़ाम किया है। अल्लाह तआला ने इस मक़सद के लिए मसीह मौऊद और महदी मअहूद अलैहिस्सलाम को भेजा है।

हज़ूर फरमाते हैं: जैसा कि मैंने कहा, मैं एक लंबे समय से लोगों को इस ओर ध्यान दिलाता रहा हूँ। वही लोग, जो उस समय मेरी बातें सुनकर कहा करते थे कि तुम दुनिया के बारे में बहुत मायूसकुन (निराशा जनक) बातें करते हो और मनफ़ी क़िस्म (नकारात्मक प्रकार) का तसव्वुर (दृष्टिकोण) रखते हो कि दुनिया एक खतरनाक युद्ध में शामिल हो जाएगी–आज वही लोग ख़ुद कहने लगे हैं कि कुछ वर्ष पहले जिस बात को हम नामुमकिन समझते थे, अब वही बात मुमकिन हो गई है और युद्ध शुरू हो चुके हैं।

हज़ूर-ए-अनवर ने फरमाया: मगरबी ताक़तों (पश्चिमी शक्तियों) ने पहले इस्लामी देशों को आपस में लड़ाया और अब उनके वसायल पर कब्ज़ा करने के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। मुसलमानों को यह बात समझनी चाहिए कि ये दज्जाली शक्तियाँ कभी भी हम मुसलमानों को एकता और आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हुए नहीं देख सकतीं। उनका असल एजेंडा ही यही है कि मुसलमानों के बीच हमेशा फसाद पैदा किया जाता रहे।

अमेरिका ने बहुत सारे इस्लामी देशों में अपने फ़ौजी अड्डे स्थापित किए हुए हैं, लेकिन किस लिए? क्या इन देशों की सुरक्षा के लिए? आखिर इन अरब देशों को किससे खतरा था? इन शक्तियों ने ख़ुद ही खतरे पैदा किए और फिर मुस्लिम देशों को यह तास्सुर (आभास) दिया कि तुम्हें खतरा है, इसलिए तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए यह व्यवस्था की जा रही है। असल में मुस्लिम देशों को जिससे असली खतरा है, उसके ख़िलाफ़ तो ये फ़ौजी अड्डे कभी इस्तेमाल भी नहीं करेंगे।

ईरान तो हमेशा ही इन देशों को खटकता रहा है। इस्राइल के खिलाफ ईरान की पालिसी ज़्यादा कठोर थी और दूसरे इस्लामी देशों से उसके इस्लामिक अक़ीदों (धार्मिक मतों) में भी इख्तलाफ़ (मतभेद) थे। इन सब बातों का इन आलमी ताक़तों ने लाभ उठाया और इस क्षेत्र में अपनी मौजूदगी (उपस्थिति) यक़ीनी (सुनिश्चित) बना ली। इन्हीं सैन्य अड्डों के वजह से ही अरब देशों पर हमलों का खतरा बना रहा और हमले भी हुए। इन हमलों के कारण अरब देशों की मईशत (अर्थ व्यवस्था) नष्ट हो गई। इस सूरते हाल का लाभ केवल उन्हीं आलमी ताकतों को हुआ और आगे भी होता रहेगा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे (चतुर्थ) रहमतुल्लाह अलैह ने इराक युद्ध के दौरान यह कहा था कि यह फ़साद अब बढ़ता ही जाएगा। काश! मुस्लिम देश इससे कोई सबक सीखते।

फिर फरमाया: यह बद-अमनी (अशांति) उन्हीं आलमी शक्तियों द्वारा फैलाई हुई है और बज़ाहिर (प्रत्यक्ष रूप से) इसके रुकने की कोई संभावना दिखाई नहीं देती, सिवाय इसके कि अल्लाह तआला की कोई ख़ास तक़दीर हो। इसके लिए भी उन्हें बहरहाल कोशिश करनी होगी और हमें भी इसके लिए दुआ करनी चाहिए।

यह ज़ुल्म जिस प्रकार रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा है, उससे लगता है कि वसी पैमाने (व्यापक स्तर) पर जंगे अज़ीम (विश्वयुद्ध) होने वाला है। बल्कि कुछ पश्चिमी तब्सिरा निगारों के अनुसार तो जंगे अज़ीम शुरू हो

चुकी है। मैं भी यही कहता हूँ कि यह शुरू हो चुका है। लेकिन अब भी यदि मुस्लिम दुनिया अक़्ल से काम ले, तो वह अब भी दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रह सकती है।

मध्य पूर्व में जो युद्ध हो रहा है, कहने को तो इसे अमेरिका ने ईरान पर हमला करके शुरू किया है, लेकिन ईरान ने पहले तंबीह (चेतावनी) दी थी कि यदि हम पर हमला हुआ तो अरब देशों में क़ायम अमेरिकी अड्डों पर हमला किया जाएगा और ऐसा ही हुआ। यह रिज़ीम चेंज का नारा लगाते थे, लेकिन क्या हासिल हुआ? खामनई साहब को तो शहादत का स्थान मिल गया और उनकी इज़्ज़तऔर बढ़ गई। उनके पूरे परिवार को मारा गया, तो इससे क्या रिज़ीम चेंज होना था? उनकी क़ौम और भी अधिक एकजुट हो गई। मध्य पूर्व के अरब देशों में कोई दफाई ताक़त (रक्षा शक्ति) नहीं है, उनका पूरा इनहिसार (निर्भरता) पश्चिमी शक्तियों पर है। यह युद्ध अब खौफ़नाक रूप ले चुका है।

अरब शक्तियों को, जहाँ एक तरफ़ तेल के कुओं के बंद होने से नुकसान हो रहा है और महंगाई बढ़ रही है, वहीं उन्हें इस युद्ध में अमेरिका की दफाई सहूलत (रक्षा सुविधाएँ) प्राप्त करने का खर्च भी उठाना पड़ेगा। इस सब से अरब दुनिया की मईशत (अर्थ व्यवस्था) को बहुत बड़ा नुकसान होगा। अमेरिका के राष्ट्रपति पिछले अमेरिकी सरकारों की नीतियों पर ही चल रहे हैं। यह उनकी आज की पालिसी (नीति) नहीं है, बल्कि लंबे समय से यही नीति रही है कि जहाँ मन चाहे, उस क्षेत्र के माल पर कब्ज़ा किया जाए और इसका जवाज़ (औचित्य) कुछ भी पेश कर दिया जाए–कि यह कारण हुआ, वह कारण हुआ। जो देश उनके साथ शामिल न हो, उसके खिलाफ धमकी और दबाव का प्रयोग किया जाता है।

हज़ूर फरमाते हैं: यूरोपीय संसद में उनकी एक स्पेनिश महिला सांसद ने खुले तौर पर वहाँ बयान दिया कि अमेरिका के किसी भी युद्ध में महिलाओं को आज़ादी नहीं मिली। वह महिला थीं, उन्होंने महिलाओं के लिए आवाज़ उठाई, क्योंकि अमेरिकी दावा करते हैं कि हम ईरानी महिलाओं की आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। लेकिन यह सब झूठ है और कभी इससे ईरानी महिला को स्वतंत्रता नहीं मिलेगी। न ही अमेरिका ने किसी महिला की स्वतंत्रता के लिए युद्ध लड़ा है और न ही इसके लिए उन्हें किसी महिला को स्वतंत्र कराने में सफलता मिली है। जहाँ इंसाफ़ नहीं होता, वहाँ तबाही आती है। इन शक्तियों ने सैकड़ों बच्चों और मासूम लोगों को मार डाला, यह कैसी लड़ाई है जिसमें बच्चों के स्कूल पर बमबारी की जा रही है और कोई पूछने वाला नहीं है।

हज़ूर फरमाते हैं: इस्लाम तो तौहीद के क़याम (स्थापना) के लिए आया था और इसी मक़सद के लिए मुसलमान देशों को प्रयास करना चाहिए और एकजुट होना चाहिए। इन शक्तिशाली देशों को अपना खुदा न समझें, वरना ये देश एक-एक करके सभी इस्लामी देशों और उनके धन संपत्तियों पर कब्ज़ा कर लेंगे।

क़ुरआन करीम ने मुसलमानों को साफ़ और सीधी हिदायत दी है कि अगर मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर, अगर सुलह होने के बाद उनमें से कोई दूसरे पर हमला करे, तो हमलावर के खिलाफ सब मिलकर लड़ो, जब तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए। और जब वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए, तो न्याय के साथ उन लड़ाई करने वालों में सुलह करा दो। यह आदेश दुनिया में शांति के लिए भी आवश्यक है, और मुसलमानों के लिए इसकी अहमियत और भी अधिक है क्योंकि अल्लाह तआला ने इसे क़ुरआन करीम में हिदायत के रूप में फरमाया है। सुलह कराते समय अपने निजी

फ़ायदे को नहीं देखना चाहिए, बल्कि असली मसले का फैसला करना चाहिए। चीन और अन्य कुछ देशों ने सुलह कराने के लिए पेशकाश (प्रस्ताव) की है। ईरान समेत उन अरब देशों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

फरमाया: काश! मुस्लिम दुनिया इस बात को समझे, अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे। बहरहाल, हमारा काम तो यही है कि ख़ास तौर पर मुस्लिम दुनिया और मासूमों के लिए दुआ करें। रमज़ान के महीने में विशेष रूप से केवल अपनी ज़ाती दुआओं पर ध्यान न दें, बल्कि उम्मत-ए-मुसलिमा के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें अक़्ल दे ताकि दुनिया में, और खासकर मुस्लिम दुनिया में, अमन क़ायम हो सके। मुसलमान मुसलमान का गला काटने वाला न बने। ये लोग, जो आपस में लड़कर गलत तरीके से एक-दूसरे को मार रहे हैं, इस अमल से वे अल्लाह तआला की नाराज़गी की वजह बन रहे हैं। ऐसे लोग न केवल इस दुनिया में नुकसान उठाने वाले हैं, बल्कि अगले जहान में भी हानि उठाने वाले होंगे। इसलिए इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी रंग में दुआ करने की तौफ़ीक़ भी अता करें।

खुत्बे के दूसरे हिस्से (भाग) में हज़ूर-ए-अनवर ने कुछ मर्हूमीन का ज़िक्र किया और ग़ाइब नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाने का इरशाद फरमाया:1. मोहतर्मा साहिबज़ादी अमतुल जमील साहिबा, जो हज़रत मुस्लह मौऊद रज़ी. की सबसे छोटी बेटी थीं और नासिर महमूद सियाल साहिब की पत्नी थीं। हज़रत चौधरी फतेह मुहम्मद सियाल साहिब रज़ी. की बहू थीं। हज़रत सैयदा मरियम बेगम साहिबा उम्मे ताहिर की बेटी थीं। हज़रत मुस्लह मौऊद रज़ी के बच्चों में भी वे सबसे छोटी थीं।1955 में हज़रत मुस्लह मौऊद रज़ी ने उनका निकाह पढ़ाया था। उनके चार बच्चे हैं। मरहूम गरीब परवर, दुआगू और नेक बुज़ुर्ग महिला थीं। 2.मुक़र्रम डॉ. रशीद अहमद ख़ान साहिब ऑफ़ हालैंड, इब्न मुक़र्रम निज़ामुद्दीन साहिब, जो हाल ही में 91 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون। मरहूम के चार बेटे और चार बेटियां हैं। मरहूम नेक फ़ितरत (स्वभाव), निडर, खुदा-तरस, मिलनसार, सिल्ह रहमी करने वाले, ख़िलाफ़त के शैदाई और क़ुर्बानी के लिए तैयार रहने वाले बुज़ुर्ग थे। मरहूम को तबलीग़ का भी बहुत शौक़ था। 3.मुक़र्रमा ज़ैनब बीबी साहिबा, पत्नी बशीर अहमद साहिब मरहूम, जो साबिक सद्र (पूर्व अध्यक्ष) जमात चक करतारपुर थे। मरहूमा हाल ही में 85 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गईं।إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون। मरहूमा मोसिया थीं। वे तहज्जुद पढ़ने वाली, दुआगू, क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाली नेक स्वभाव की महिला थीं। उनकी बेटी, जो इस्लामी मिशनरी (मुबल्लिग़) हैं, अपनी वालिदः के जनाज़े में शामिल नहीं हो सकीं।

हज़ूर-ए-अनवर ने सभी मरहूमीन व्यक्तियों की मग़फ़िरत और उनके दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

لاَمُضِلَّ

لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131